गठ्वाला खाप की वो छत्रछाया जिसनें बसा दिए आज के यू पी के बाहतर गाँव

(A journey from Sonipat to Muzffarnagar)

गठ्वाला खाप के छोटे दादा चौधरी हरकिशन सिंह मलिक पूछने पर बताते हैं कि आज के यू.पी. (उस ज़माने के यमुना-पार का हरियाणा), में मलिक गोत्री जाटों के यहाँ जो 72 गाँव हैं (ये गाँव हरियाणा और दिल्ली में बसे मलिक गोत्री गठ्वाला खाप के गावों के अतिरिक्त गाँव हैं) वो कैसे सिर्फ एक परिवार से आज 72 हो गए हैं|

यह सन 1756 (यह वह जमाना था जब महाराजा सूरजमल के राज की उस जमाने के पूरे हरियाणा में दुद्दुम्बी बोल रही थी) के आसपास की बात है कि एक मलिक गोत्री जाट लड़का, घर से नाराज हो कर आज के लिस्सद गाँव, जिला मुजफ्फरनगर चला आया और इस गाँव के एक इकलौते जाट-जमींदार के यहाँ नौकरी करने लगा| जब उस जमींदार को पता लगा कि यह लड़का भी जाट है तो उसने अपनी इकलौती लड़की इस लड़के से ब्याह दी| उस जमाने में यहाँ भादी जाति के लोग रहते थे| उन्होंने इस लड़के को जमीन के लालच में मार दिया| तो फिर वो विधवा लड़की (जो अब मलिक खाप के लड़के की बहु थी, इसलिए उसके मान-सम्मान की रक्षा की नैतिक जिम्मेदारी स्वत: ही गठ्वाला खाप की थी) हरियाणा में गठ्वाला खाप के दादा के पास आई और अपनी आपबीती दादा को सुनाई तो दादा ने लड़की (गठ्वाला खाप की बहु) की मदद हेतु खाप के पहलवानों और अन्य लोगों को भेजा और मामला देखने को कहा|

खाप के पुरोधाओं ने वहाँ जा के मामले का संज्ञान लिया तो पूरी बात धक्कासाही के तहत समझ आई और उसके प्रतिकार में उस पूरी जाति ने अपनी उडदंता दिखाई और "चोरी और उसपे सीना-जोरी" की कहावत के जैसे जिद्द पे अड़ी नजर आई |

जब मान-मनुहार से बात नहीं बनी तो पूरे हालात का ब्यौरा दादा को संदेशा दे हरियाणा भेजा गया| तो दादा ने आदेश दिया की शांति से हमारी बहु की जमीन पर से कब्ज़ा हटा लें और चैन से बसें और बसने दें, वरना उनकी माएँ ऐसे रोयेंगी जैसे बिना बछड़े के गाय| लेकिन इतने पर भी वो जब नहीं माने तो फिर उन पर खाप का ऐसा हमला हुआ कि कुछ तो हमले में मारे गए और जो बाकी बचे वो वहाँ से अपना रैन-बसेरा उठा के कहीं और चले गए|

और ऐसे पड़ी आज के यू .पी. (उस वक्त के हरियाणा के ही यमुना-पार के हिस्से में) में गठ्वाला खाप के सबसे पुराने और बड़े गाँव लिसद की नींव| और आज के दिन मेरठ, शामली और मुजफ्फरनगर में लिसद गाँव से फ़ैल मलिक गोत्री गठ्वाला खाप के 72 गाँव बसते हैं|

पूरी कहानी जान गौरवांवित अहसास हुआ कि खापें वैसे ही खापें नहीं कहलाती आई हैं, वो अपनी बहु-बेटी के मान-सम्मान के लिए सब-कुछ न्यौछावर करने के जौहर करती आई हैं| और आमजन तक उनकी इतनी लग्न और निष्ठां की पहुँच ही खापों की नैय्या उस 1100 से शुरू हो 1947 तक के देश की गुलामी के दौर और आज तक के दौर में भी इनको यथावत खड़ी किये हुए हैं| वरना इस दौर में कितने ही राजे-रजवाड़े आये और गए| कोई दूसरे के समाज से

जलता भुनता तो कुछ भी कहे, परन्तु इन खापों ने उस लोकतंत्र को उन सदियों में क्रियान्वित करके दिखाया है, जिनको आज के आधुनिक स्वघोषित सभ्य मध्य-युगीन कहते हैं और जो आज 2013 (इक्कसवीं सदी) में भी देश की आज़ादी से ले आज तक की कई सरकारें अपने नागरिकों को उसके सिर्फ सपने ही दिखाती आई हैं| अगर किसी सरकार ने सच्चा लोकतंत्र दे भी दिया तो शायद ऐसी कोटि का ना दे सकें जो खापें आज से सदियों पहले दे चुकी हैं, और आज भी देश को ऐसे ही तन्त्र की दरकार है|

Courtesy: Ajay Malik and Phool Kumar Malik